

Topic — गाँधी जी की विचारधारा व आंदोलन

“गाँधी के महत्वपूर्ण कथन व विचार”

- अ - सिद्धांतों के कई दलों से व्यवहार का एक अंश जारी होता है।
- ब - साधम व साधन की पवित्रता पर विश्वास करते थे उनके अनुसार यदि साधन अपवित्र हुआ तो साधम की पवित्रता भी खंडित हो जायेगी अल्बेकनीन है कि “कार्ल मार्क्स” ने साधम की पवित्रता को ही महत्ता दी थी इसीलिए उसके विचारों में हिंसा स्वीकार्य है किंतु गाँधी के दर्शन में हिंसा का स्थान नहीं है।
- क - गाँधी का राजनैतिक दर्शन सत्याग्रह पर आधारित है अर्थात् अहिंसा के माध्यम से सत्त्व की स्थापना करना वस्तुतः गाँधी अहिंसा के द्वारा परिवर्तन को ही स्थायी मानते थे और इसके लिए हृदय परिवर्तन की बात करते हैं। Nation के क्रिया प्रतिक्रिया के नियम को उन्होंने वस्तु पदार्थों के लिए ठीक सही माना किंतु सामाजिक व्यवहार में नहीं माना उनके अनुसार समाज क्रिया प्रतिक्रिया से नहीं सहित्गुता व आपसी सामंजस्यता से आगे बढ़ता है।

गाँधी के अनुसार किसी भी गलत राह पर चल रहे व्यक्ति का दृढ़ परिवर्तन कर उसे सही मार्ग पर लाया जा सकता है किंतु अनुपयुक्त मुलाकात अट्ठा होता है। यह परिवर्तन संभाव्य ही हो सकता है जो अनेक कष्ट सहते हुए अपने सद्व्यवहार से गलत मार्ग पर चलने वाले को सही मार्ग पर ला सकता है। इसी संदर्भ में गाँधी जी ने अहिंसा को साक्षियों का अस्मा माना और यहाँ तक कहा कि "अगर मुझे हिंसा और क्रूरता में से किसी एक को चुनना हो तो मैं हिंसा को चुनूँगा।"

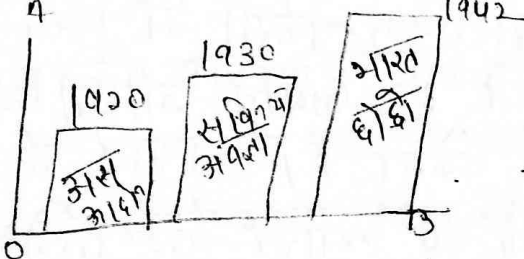
(i) गाँधी जी सर्वोदय का विचार देते हैं जिसके द्वारा वे सभी वर्गों का सभी आयामों से उन्नति की बात करते हैं उल्लेखनीय है कि मार्क्स सर्वद्वारा के हितों पर अधिक बल देता है इसी तरह प्रायः सभी दार्शनिक किसी न किसी एक पक्ष को केन्द्र में रखते हैं जबकि गाँधी का विचार सम्पूर्णता दिखाई देता है।

(ii) गाँधी जी भारत पर पड़ने वाले पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों के प्रभावों से दुखी थे और इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि "मैं यह नहीं चाहता कि केवल अंग्रेज इस देश से बाहर जाए बल्कि मेरी चाहत तो यह है कि अंग्रेजीयता इस देश से बाहर जाये।"

विशेष (4) गाँधी के आंदोलनों की रणनीति को "संघर्ष बनाम संघर्ष" उक्ति भी दी जाती है जिसके अनुसार ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रत्यक्ष का दौर महलाभा जबकि विराम का दौर तो संघर्ष के दौर से भी अधिक चुनौतिपूर्ण था क्योंकि इस समय रचनात्मक कार्यक्रमों से जनता को राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से जागरूक बनाकर उन्हें राष्ट्रीय संघर्ष में भागीदार बनाया जाता था।

विराम के दौर में चरखा काढ़ना, सूत मातना और अस्पृश्यता उन्मूलन और हिंदू मुस्लिम एकता जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम किये जाते थे।

संघर्ष विराम संघर्ष की इसी रणनीति के कारण गाँधी जनता के बीच सदैव बने रहें, उनकी लोकप्रियता बढ़ती गई और उनके आंदोलनों में जनसहभागिता पहले के आंदोलनों से बढ़ती चली गई।



U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें
(Don't write anything
in this part)

“गांधी का भारतीय राजनीति में निर्विवाद
नेता के रूप में उभार व स्वीकारिता”

(1893-1915)

दक्षिण अफ्रीका रहे

(परिस्थितियों ने गांधी
बनाया)

1915

वार्मि से गांधी बने

दक्षिण अफ्रीका प्रवास के बाद जब गांधी 1915
में भारत वापस लौटे तो उनके व्यक्तित्व,
विचारों और अंतर्दृष्टियों की राजनीति ने उन्हें
निर्विवाद रूप से राष्ट्रीय संघर्ष का नायक
बना दिया तो यह जानना आवश्यक हो जाता है कि
आखिर गांधी को इस सम्राट्मक तरीके से
क्यों स्वीकारा गया।

इसे दो आंखों पर समझा जा सकता है—

1) परिस्थितियों के आधार पर (1893-1915) है—

⑥ गांधी को शून्य से आरंभ नहीं करना पड़ा
क्योंकि भारत राष्ट्रवाद से परिचित होने लगा था
और 1885 में कांग्रेस स्थापित हो चुकी थी तथा
उदारवाद व उन्नतवाद की राजनीति जब अपेक्षित
सफलता न दिला सकी तो जागरूक वर्ग रुक

नए नेतृत्व की आकांक्षा कर रहा था।

③ दक्षिण अफ्रीकी प्रवास भी इस सँदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वहाँ की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों ने गाँधी को नेतृत्व के लिए प्रेरित किया और गाँधी के राजनीतिक प्रभावों की अवधारित अभिव्यक्ति अफ्रीका में ही मिली और जब वे भारत वापस आए तो उन्हें वैसे ही परिस्थितियाँ मिली भी दिखाई दिया।

④ गाँधी के भारत आगमन से पहले ही सफलता का मानक उनसे जुड़ गया था जिसके दो प्रत्यक्ष लाभ हुए —

① जनता का उनके नेतृत्व के प्रति विश्वास बढ़ा और किसी भी आंदोलन की सफलता के लिए जनता का नेतृत्व में विश्वास बने रहना महत्वपूर्ण होता है।

② गाँधी के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और उन्हें किसी भी परिस्थिति में चुनौतियाँ स्वीकारने और नेतृत्व करने का प्रोत्साहन मिला।

③ कुछ विद्वान गाँधी की लोकप्रियता व सफलताओं में अफवाहों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं उनके अनुसार कई ऐसे सचित्रों में गाँधी के नेतृत्व में कही गई जिन्ना कभी गाँधी ने

समर्पण ही नहीं किया जैसे - असम में चाय
कुलियों का संघर्ष।

② गांधी के व्यक्तिगत गुण और रणनीति :-

⑥ 1915 में जब गांधी भारत वापस आए तो पहले
दो वर्ष लगभग संपूर्ण भारत का भ्रमण कर
लोगों की क्षमता को परख चुके। उन्हें जन
संघर्ष करना या अतृप्त जनता की मनोदशा की
समझ आवश्यक थी।

⑦ आरंभ में गांधी किसी राजनैतिक दल से नहीं
जुड़े क्योंकि इससे उनकी लोकप्रियता प्रभावी हो
सकती थी और 1917-18 के बीच तीन स्थानीय
प्रयोगों, जो किसानों और श्रमिकों से जुग जुड़ा
था, की सफलता ने उनकी लोकप्रियता को चरम
पर पहुँचा दिया। प्रायः सभी लोग उन्हें शोषण
से मुक्ति का भसीब समझने लगे।

⑧ राष्ट्रीय नेता के रूप में गांधी जी ने जो अपनी
छवि प्रस्तुत की वह आम आदमी की पहचान से
जुड़ी थी, विचार, वैराग्य, व्यवहार आदि के माध्यम
लोगों के साथ उनका जुड़ाव केवल बौद्धिक व
सहज आत्मिक हो गया और धीरे-धीरे गांधी
नेता से महात्मा बनते हुए लोगों का विश्वास
बन बैठे। अतः जनता में उनका आधिपत्य बना
रहा।

उल्लेखनीय है कि गाँधी के आंदोलनों में भी नारी सहभागिता की उल्लेखनीय रही है जिसने गाँधी की महात्मा की छवि में विशिष्ट भूमिका निभाई और गाँधी के आंदोलनों में भाग लेना सामाजिक - सांस्कृतिक समारोह में भाग लेना जैसा हो गया।

संघर्ष विराम संघर्ष की रणनीति :- गाँधी

को महान नेता के रूप में स्थापित करने में केवल परिस्थितियों व अपवाहों की भूमिका को ध्यान में रखा जा सकता है वस्तुतः गाँधी के विचारों और रणनीति के द्वारा जो सफलताएँ उन्हें मिली उसने लोगों को यह सहसास दिलाया कि यदि नेतृत्व गाँधी करेंगे तो सफलता आवश्यक मिलेगी।

अतः परिस्थितियों व अपवाह सहयोगी रूप से तो स्वीकार्य जा सकती हैं किंतु गाँधी के कृत्य और उनके संघर्षों की अनदेखी नहीं की जा सकती।